RNI. NO. CHHHIN/2012/50023

शार्पनेस

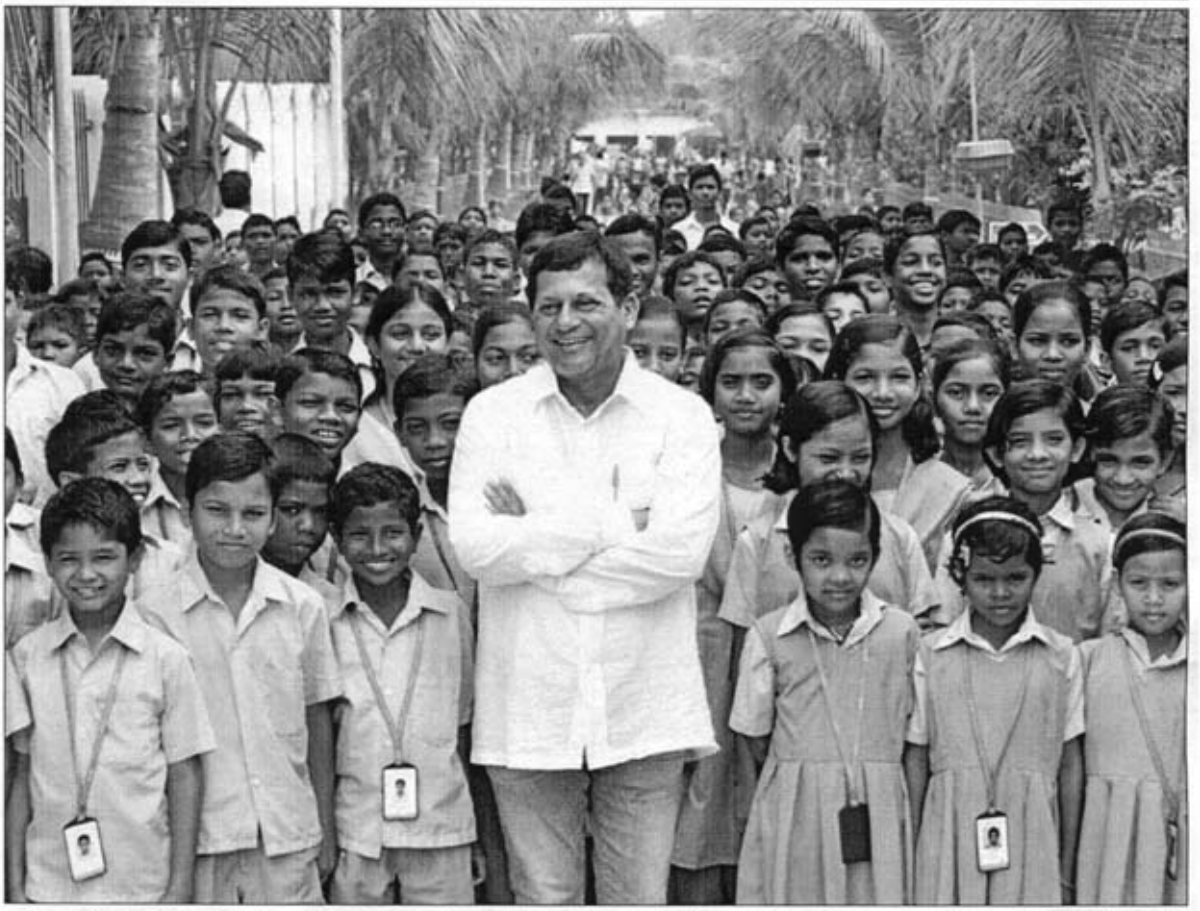

वर्ष-02 • अंक-09 • रायपुर - 15 मई से 14 जून -2014 • मासिक • मूल्य - 20 रुपए • पृष्ठ-28

मात्र पांच हजार रुपये की अपनी बचत राशि से **डा. सामंत ने कलिंगा इंस्टिट्यूट आफ इंडस्ट्रिल टेक्नोलाजी** (KIIT) की शुरूआत 1992 में की थी, जो आज एक पूर्ण विश्वविद्यालय की शक्ल ले चुका है। इसी इंस्टिट्यूट से प्राप्त होने वाले लाभ का रुख डा. सामंत ने kiss की और मोड़ दिया। आज भी एक अविवाहित का जीवन जी रहे डा. सामंत स्वयं एक किराये के मकान में ही रहते हैं और सादा जीवन जी रहे हैं। उनके अनुसार मुनाफे की सबसे बड़ी परिभाषा भारत के हर गरीब बच्चे को शिक्षित करना ही है, अब वे अपने इस सपने का दायरा बढ़ाने में तत्पर है। उनके इस माडल से प्रभावित होकर, पिछले वर्ष दिल्ली सरकार ने भी गरीब बच्चे के लिए के.आई.एस.एस. दिल्ली की शुरूआत की, जो सुचारू रूप से चल रहा है और डा. सामंत का प्रयास है कि kiss की शाखाएं और भी राज्यों में खोली जाएं। kiss के अधिकतर कार्यों में undp, unicef, unesco, unfpa और us Federal Government की भागीदारी से यह पता चलता है कि किस तरह संस्थान को विश्व विख्यात संस्थान विकास का एक उत्तम माडल स्वीकार करते हैं। डा. सामंत से बात करने पता चलता है कि विश्व के कई और देश भी इस संस्थान को विकास के एक संपूर्ण माडल के रूप में स्वीकृति देते हैं। कई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचार पत्र पत्रिकाओं ने, डा. सामंत के इस प्रयास को अपने प्रकाशनों में सम्मानित जगह प्रदान की है। डा. सामंत को समय- समय पर अनेकों विशेष सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। डा. सामंत इस समय स्वयं भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) के सदस्य भी हैं। अपनी सफलता का राज पूछे जाने पर, अपने व्यक्तित्व के अनुरूप ही सादे स्वभाव वाले डा. सामंत कहते हैं, अथक परिश्रम, निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना और ईश्वरीय कृपा, इसी से सब संभव हो पाता है। विश्व को एक नया और सफल माडल देने वाले इस मार्गदर्शक को अपना जीवन आज भी बहुत सरल है और पूछने पर वह बताते हैं, मेरे जीवन का मूलमंत्र है कि जो भी मेरे पास है मैं उसे दूसरों को दे सकूं,जिससे की उसके और अन्य दूसरों के जीवन का कल्याण हो और एक सुन्दर समाज का निर्माण हो सके। अपने पूरे जीवन में मैंने इस बात को जिया है कि, जो खुशी सुख देने में है वह दुनिया की और किसी चीज में नहीं है। इसी विचारधारा को मूर्तरूप देते हुए डा. सामंत ने बीते वर्ष **आर्ट आफ गिविंग** की शुरूआत भी की है।

जिन हाथों ने-बंदूक उठाने थे, उन्हें कलम थमाई डॉ. सामंत ने

वर्तमान परिदृश्य में भारत के हालत को देख कर लगता है की बहुतयात में लोगों के पास चर्चा और परिचर्चाओं के द्वारा हर बड़ी से बड़ी समस्या के समाधान है और सभी इस राष्ट्र के सामने मौजूदा हर संकट को हल करने में तत्पर हैं लेकिन वास्तविकता में जो घट रहा है। वह भाषणों और घोषणाओं से कोसों दूर हैं।

हाल ही में अंडमान और निकोबार की आदिवासी प्रजाति के कुछ पुरूष सदस्यों ने अन्य लोगों द्वारा उनकी महिलाओं के साथ किये जाने वाले यौन शोषण का खुलासा कर

के सब को चौंका दिया। भारत में लगभग 700 के करीब आदिवासी प्रजातियाँ हैं जो प्रकृति के निकट अपने विशेष रहन-सहन कारण समाज में एक खास स्थान रखती हैं। और इसी कारण भारत सरकार ने संविधान में उन्हें अनुसूचित जनजाति का दर्जा देकर उनके विशेष अधिकारों को संरक्षित कर रखा हैं लेकिन दुख की बात है दुख की बात है कि जिन जनजातियों को संरक्षण प्रदान करने की हमारा संविधान कवायद करता है, आज वही सबसे ज्यादा शोषित वर्ग बन चुका है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक असंख्य ऐसे उदाहरण मिलते हैं। जहां इन लोगों की मासूमियत और ईमानदारी का लाभ उठा कई मौकापरस्त लोग अपना उल्लू सीधा करते मिलेंगे। इन जनजाति के युवाओं को आसानी से बरगला के उन्हें हिंसा के मार्ग पर धकेला जा रहा है। इनमें कई नौजवान आतंकवाद या नक्सलवाद की भेंट चढ़ के अपना बहुमूल्य जीवन बर्बाद कर देते है। सफेदपोश अवसरवादी लोग भी खुद को इनका हिमायती साबित करके अनुदान ईकट्ठा करने का मौका नहीं चुकते और भरपूर शोषण करते हैं।

लेकिन इन सभी दुखद घटनाओं के बीच भी बहुत बड़े स्तर पर अनोखा प्रयास भी हो रहा हे जो विश्व में अब तक का सबसे बड़ा और सफल प्रयास साबित हुआ और है। **डॉ. अच्युत सामंत नाम के इस व्यक्ति ने अपनी अद्वितीय सोच और दूरदर्शिता से वह कर दिखाया है, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके द्वारा वर्ष 1993 में स्थापित कलिंग इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (kiss) में आज 20,000 से भी अधिक आदिवासी बच्चे उच्च स्तर की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और यही नहीं यहां शिक्षा के साथ-साथ रहने, भोजन तथा स्वास्थ्य जैसी अन्य सभी सुविधाओं का भी लाभ उठा रहे हैं, और सोने पर सुहागा ये की यह सब बिल्कुल नि:शुल्क है।** वहां जाकर देखने पर यह आभास होता है। की इन सभी बच्चों का डॉ.

डॉ. ए. सामंत

सामंत से कोई रिश्ता है जो केवल ये बच्चे और डॉ. सांमत ही समक्ष नहीं सकते हैं। कहते हैं प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या आप kiss द्वारा प्रशिक्षित कई छात्रों को देखेंगे जो कई संस्थानों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम कर रहे हैं और राष्ट्र की तरक्की तथा उन्नति में भागी बन रहे हैं। ये वही बच्चे हैं जो शिक्षा के अभाव में आसानी से बरगलाये जा सकते थे जिन हाथों में कोई समाज विरोधी काम करने के लिए हथियार थमा देता, डॉ. सामंत ने उन्हीं हाथों में कलम थमा दी। स्वयं अपने जीवन को बहुत करीब से देखने वाले डॉ. सामंत इन आदिवासी बच्चों को खाना और धन देने के दावे ना करके इन्हें ज्ञान की ताकत देने में विश्वास रखते है। और वैसा कर भी रहे है। न तो kiss में इनकी संस्कृति और ना ही धार्मिक आस्थाओं से छेड़-छाड़ की जाती है, बल्कि डा. सामंत समय-समय परइनके अभिभावकों को बुला के उनको भी जागरूक करते हैं। सबसे मजेदार बात यह है कि आज तक इतने वर्षों में एक भी बच्चे ने अपनी शिक्षा पूरी किये बिना kiss को बीच में नहीं छोड़ा है।